दैनिक भास्कर 05/09/2021

शिक्षक दिवस विशेष • अम्बाला में जीएमएन कॉलेज के संस्थापक भगतराम शुक्ला की कहानी

अंग्रेजों को शक न हो इसलिए लड़कियों के स्कूल में हुकूमत के खिलाफ रात को रणनीति बनाते थे

शुक्ला ने शिक्षा को बनाया था अंग्रेजों के खिलाफ हथियार

भास्कर न्यूज | अम्बाला

अम्बाला कैंट में जीएमएन कॉलेज के संस्थापक अध्यक्ष पंडित भगत राम शुक्ला खुद शिक्षक थे। उन्होंने शिक्षा को ही अंग्रेजों के खिलाफ हथियार बनाया था। मार्च 1887 को पंजाब के गांव लसाड़ा में जन्मे भगत राम जब 13 साल के थे तब उनके पिता नत्थू राम शुक्ला को अंग्रेजों ने यातनाएं देकर मार डाला था। वह विचलित तो हुए लेकिन पढ़ाई जारी रखी। गांव लसाड़ा से फिल्लौर पढ़ने जाते थे। आने-जाने के लिए साधन नहीं थे तो रोज सतलुज दरिया पार करनी पड़ती थी। फिल्लौर से पढ़ाई करने के बाद वे लाहौर गए और बीए, बीटी की। 1912 में अध्यापक बने और पंजाब के कई स्कूलों में प्रिंसिपल भी रहे। तहसील खरड़ और लसाड़ा में कन्या स्कूल की स्थापना की। वे जब खरड़ में लंदन बैपटिस्ट चर्च मिशन हाई स्कूल में प्रिंसिपल थे तो महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर पद से त्यागपत्र दे दिया। आंदोलन को 384 गांवों में फैला दिया। 161 नंबरदारों ने इस आंदोलन के समर्थन में पदों से त्यागपत्र दे दिए। उन्हें सरकार ने गिरफ्तार करवा दिया। एक साल

जीएमएन कॉलेज में छात्र को सम्मानित करते पंडित भगत राम शुक्ला।

जेल में रहने के बाद छूटते ही फिर आंदोलन में सक्रिय हो गए। 1921 में अंग्रेजों ने उन्हें गांव लसाड़ा में 3 साल के लिए नजरबंद कर दिया। नजरबंदी के दौरान ही उन्होंने वहां ईंट-भट्ठा लगाया। फिर गलियों को पक्का करवाया, कई कुएं, धर्मशाला व लड़कियों के लिए स्कूल बनवाया। किसी को शक न हो तो रात को इसी स्कूल में अंग्रेजों के खिलाफ रणनीति बनाई जाती थी। जब लसाड़ा से फिल्लौर तक सड़क बन गई तो अंग्रेजों को इस बात का पता चला। उन्होंने पंडित भगत राम शुक्ला को बर्फ की सिलियों पर लिटाकर यातना दी, टांगे तोड़ दी। 1930 में नमक पर टैक्स लगाने के विरूद्ध महापंजाब में आंदोलन का नेतृत्व किया। अंग्रेजों ने इन्हें बब्याल गांव से गिरफ्तार कर लिया। 3 महीने की सजा सुनाई गई। 1939 में नगरपालिका का निर्विरोध सदस्य चुना गया। 1940 में सदस्यता से त्यागपत्र देकर आंदोलन में कूदे। इन्हें फिर गिरफ्तार कर 6 महीने के लिए जेल भेज दिया गया। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान भगत राम शुक्ला को 9 अगस्त 1942 को अंग्रेजों ने फिर गिरफ्तार कर लिया। 10 नवम्बर 1942 को भारत सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत इन्हें फिर 30 दिन तक पुलिस हिरासत में रखा गया। मार्च 1948 में उन्होंने अम्बाला में गांधी मेमोरियल नेशनल (जीएमएन) कॉलेज की स्थापना की। वे कॉलेज के फाउंडर प्रेसिडेंट थे। महापंजाब के समय पंडित भगत राम शुक्ला 25 साल तक अम्बाला कांग्रेस कमेटी के प्रधान रहे। 14 मार्च 1959 को हृदय गति रुकने से निधन हो गया।